विकल्प
संगम

युवाओं की कहानियां

संघर्ष, उम्मीद और सामूहिक सपने की

खंड-5

‘साधारण’ लोगों के असाधारण कार्य:
महामारी और तालाबंदी से परे

अप्रैल, 2021

अनुक्रमणिका

परिचय 01

अदोर 03
हाशिये की महिलाओं की सहायता की पहल

चिन्हारी 06
मजबूत बनते संबंध, उम्मीद की खोज

चैनल 5 09
आनलाइन श्रुति मंच

श्रमिक सम्मान 12
प्रवासी मजदूरों के लिए ग्रामीण आजीविका में सहायता

ग्रीन वार्म 15
कचरा प्रबंधन से आजीविका

स्वराज की खोज 18
सकारात्मक कार्रवाई की दिशा में संवाद

कम्युनिटी कनेक्ट चैलेंज 21
युवाओं में नेतृत्व विकसित करना और नागरिक जागरूकता

बीजोत्सव 24
किसान और उपभोक्ताओं का संबंध मजबूत करना

फार्म2फुड फाउंडेशन 27
भविष्य के लिए खेती, मुकाबले के लिए खेती

विचारणीय प्रश्न 30

परिचय

क्या हम ऐसे भविष्य का सपना देख सकते हैं जिसमें भारत के युवाओं का जीवन सुरक्षित और जीवंत हो? जहां सभी युवाओं को समान अवसर मिले, जहां वे आत्मविश्वास और सम्मान के साथ व्यावहारिक जीवन कौशल सीख सकें। जहां उन्हें सुरक्षित और सार्थक आजीविका पाने के मौके हों और उन्हें स्वास्थ्य सेवाएं, पोषण और सुरक्षित खाद्य मिल सकें। जहां वे अपने पसंदीदा जीवन के लिए निर्णय ले सकें, वे उनके सपने पूरे कर सकें जिससे उनका जीवन बेहतर हो सकें?

क्या हम उन मूल्यों को बढ़ाने में मददगार हो सकते हैं जिसके आधार पर दुनिया लोकतांत्रिक, टिकाऊ और बराबरीपूर्ण हो, जहां देखभाल, सम्मान, सहानुभूति, उदारता, दयालुता और दृढ़ नैतिकता हो। इस आधार पर हमारे संबंध बनें। इसमें गैर मानव प्रजातियां भी शामिल हों।

भारत में करीब 27.5* फीसदी युवाओं की आबादी है। इसलिए ऐसी नीतियों व कार्यक्रमों की जरूरत है जिससे न केवल असुरक्षित व वंचित तबकों (आर्थिक स्थिति, लिंग, वर्ग, विकलांगता आदि द्वारा हाशिये पर रहनेवाले युवा) के युवाओं का ध्यान रखा जाए, बल्कि सभी युवाओं तक इसकी पहुंच हो, जो एक बेहतर दुनिया की नींव हैं।

वर्ष 2020 में महामारी ने हमारे समाज में जो गंभीर खोट है, वह उजागर कर दी। कोविड-19 ने पूरी दुनिया को धीरे-धीरे जाम कर दिया, उसके पहिए को रोक दिया। इसने सभी को प्रभावित किया, लेकिन इससे सबसे तगड़ा झटका समाज के वंचित तबके को लगा, जिसने अचानक तालाबंदी से अपने रोजगार व आजीविका को खो दिया।

तालाबंदी के दौरान महीनों तक बड़ी संख्या में युवा राहत कार्यों में जुटे रहे। खाद्य और अन्य जरूरी वस्तुओं का प्रवासी मजदूरों में वितरण किया, जो शहरों में अटक गए थे या उनके गांवों तक लम्बी व कठिन यात्राओं में फंसे थे। यह पहल बहुत सराहनीय है, साथ ही ऐसे कष्टदायी समय में जरूरी भी थी। यहां ऐसे युवा भी थे, जिन्होंने उनके समुदाय के साथ मिलकर काम किया, जिससे महामारी का मुकाबला किया जा सके, और तालाबंदी के प्रभाव को कम करने में भी मददगार हो।

ऐसे कठिन समय में युवा सामूहिकता, युवा संगठन और व्यक्तियों ने भी सहायता की पहल की, जिससे महामारी का सामना करने में मनोवैज्ञानिक सहायता मिली, जो उससे ही उत्पन्न हुई थी। तालांबदी के कारण बहुत से संकट व चिंताएं आई थीं, जैसे सामाजिक रूप से लोगों का अलग-थलग होना, आजीविका का असुरक्षित होना और सेहत खराब होने का डर होना (खुद की और स्नेही निकटवर्ती लोगों की) इत्यादि।

---

* राष्ट्रीय युवा नीति,2014 के अनुसार 15 से 29 वर्ष तक के युवाओं को युवा परिभाषित किया गया है।

कुछ शहरी और ग्रामीणों युवाओं के नेटवर्क को और व्यक्तियों को डिजिटल माध्यम इस्तेमाल करने का फायदा था। उन्होंने प्रतिभागियों को आनलाइन कोर्स व बातचीत के लिए आमंत्रित किया, जिसके माध्यम से कई मुद्दों पर सार्थक संवाद आयोजित किए गए। अपने पसंदीदा नए कौशलों को बढ़ाया, प्रस्तावित नए पर्यावरण कानूनों का विरोध किया, प्रस्तावित खदान, बांध और बड़ी परियोजनाओं का विरोध किया।

इस दौरान खुद के लिए खाद्य व सब्जियां उगाने में दिलचस्पी बढ़ती दिखाई दी। इस कठिन परिस्थिति में जो भी क्षेत्र में संभव था, विशेषकर शहरों में, वह किया। गांवों में, ऐसी कई कहानियां सुनने में आईं कि जो प्रवासी मजदूर शहरों से गांव में आए थे, उन्होंने कृषि कार्य में मदद की। यहां तक कि तालाबंदी के दौरान विद्यार्थियों ने अपने समय का सदुपयोग घर की बागवानी में काम करके किया। उन्होंने अभिभावकों के साथ उनके काम में हाथ बंटाया।

कुल मिलाकर, इस दस्तावेज में ऐसे प्रयासों की झलक देने की कोशिश की गई है जिससे उम्मीद कायम रहे। महामारी ने युवाओं को यह एहसास कराया है कि समाज में कितनी गहरी दरारें हैं, कितना नाजुक है हमारा ग्रह और इसमें कितना डरावना भविष्य है। संकलित कहानियां समाज में आशा और उम्मीद जगाने की हैं, महामारी का सामना करने की हैं, और साझे सपने की हैं, जो युवाओं को यह दिखाती हैं कि सचमुच एक दूसरी दुनिया संभव है। इस हैशटेग को लोकप्रिय बनाना चाहिए,जो ट्रेंड करे, जिसमें दूसरी नई दुनिया प्रतिबिम्बित हो।

अदोर

हाशिये की महिलाओं की सहायता की पहल

प्यार व आनंद के पल

प्रांतकथा

हम ऐसी दुनिया में रहते हैं, जो विभाजन, पूर्वाग्रह, श्रेणीबद्धता और पूर्व धारणा के आधार पर हमें एक दूसरे से अलग करती है, वह विनाशकारी है। कुछ लोग हाशिये पर हैं, अलग-अलग तरीके से- जैसे यौनकर्मी, विदेशी भूमि पर अलग भाषा बोलनेवाले, मैला ढोनेवाले, अनाथ बच्चे, प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करनेवाली महिलाएं इत्यादि।

प्रांतकथा, एक गैर सरकारी संगठन है, जिसकी वर्ष 2006 में कोलकाता में स्थापना हुई थी। इस संस्था का विश्वास हाशिये के समुदायों से उभरी कहानियों के माध्यम से बदलाव लाने में है, और सक्रिय नागरिकता के जरिए बदलाव की प्रक्रिया को बढ़ावा देना है, विशेषकर युवाओं के माध्यम से इसे आगे बढ़ाना। प्रांतकथा, लोगों की बेहतर सेहत के लिए काम करती है, विशेषकर, सभी वंचित सामाजिक तबकों के युवा, जिसमें कोलकाता के बाहर निवासरत समलैंगिक (एल जी बी टी क्यू आइ ए) समुदाय के कई नेतागण भी शामिल हैं। यह वर्तमान में पूरे पश्चिम बंगाल में कार्यरत है। इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए लोगों को आपस में जोड़ना है। मित्र बनाना और उनसे अपनी निजी जिंदगी की कहानियां साझा करना और उसके माध्यम से लोगों की सहायता करना। इससे बदलाव लाने में मदद मिलती है। दुख-दर्द शक्ति में रूपांतरित होता है और वह उनके समुदायों में उन्हें नेतृत्व लेने में सक्षम बनाता है। पिछले 15 सालों से, कम्युटिनी, द यूथ कलेक्टिव और वार्तालीप के गठबंधन के सदस्यों के माध्यम से, कई लोगों की आशा की कहानियों के जरिए यह काम बखूबी किया जा रहा है। प्रांतकथा ने इन उम्मीद की कहानियों के द्वारा हजारों लोगों की जिंदगी को छुआ है। इन कहानियों की संख्या 560 के करीब है।

#प्यार #करुणा #देखभाल #एकजुटता

अदोर- देखभाल और करूणा

प्रांतकथा ने युवाओं के द्वारा एक पहल शुरू की है, अदोर, जिसका बंगाली में मतलब है गहरा लगाव, प्यार और देखभाल का सम्मिलित रूप। कोलकाता में रवीन्द्र सरोवर और धाकुरिया झील बहुत जानी मानी जगह है, यहां भीख मांगने के लिए बहुत ही युवा विधवाएं आती हैं, उसी से उनका गुजारा होता है। 60 के दशक के उत्तरार्द्ध तक इन सफेद साड़ी पहननेवाली महिलाओं पर कोई ध्यान नहीं देता था, लेकिन वर्ष 2017 में प्रांतकथा के युवाओं ने इसमें हस्तक्षेप किया। उन्होंने सोशल मीडिया पर इन महिलाओं की देखभाल की भावनात्मक अपील की, जिनमें से अधिकांश को उनके परिवार ने छोड़ दिया था। उन्होंने यह सुझाव दिया कि लोग इन दादी मांओं की देखभाल के लिए, उनके जीवन निर्वाह के लिए कुछ खर्च वहन करें। और बदले में सिर्फ न केवल उनसे आशीष लें, बल्कि गर्मजोशी से प्यार व स्नेह भी पाएं। इसे उन्होंने अदोर का नाम दिया।

यह अपील तेजी से फैल गई, और जल्द ही सहायता मिलने लगी। कुछ ही सालों में, नागरिक देखभाल नेटवर्क बना। अब 32 विधवा महिलाओं को निर्वहन के लिए भीख मांगने की जरूरत नहीं है। अदोर, अब अलग- अलग पीढ़ियों के सुबह मिलने का अड्डा बन गया। आपस में बहुत अच्छी मित्रता हो गई और युवाओं को भी इसके बदले में दादियों से गर्मजोशी से स्नेह व प्यार मिला, जिसकी उन्हें हमेशा से ही चाहत थी, क्योंकि वे एकल परिवार में पले-बढ़े थे, और इनमें से कुछ ने उनकी दादियों को खो दिया था। अदोर ने आर्थिक वर्ग की सीमाओं को भी तोड़ा। इनमें से ज्यादातर मदद करनेवाले उच्च मध्यवर्ग व उच्च आर्थिक वर्ग के लोग थे।

अदोर और महामारी

वर्ष 2020 के मार्च महीने में जब सरकार ने जनता कर्फ्यू घोषित किया, उसके एक दिन पहले, प्रांतकथा की टीम ने दादी माओं से मुलाकात की, और उन्हें दो महीने के लिए राशन दिया। आगे के कठिन समय को देखते हुए यह निर्णय किया गया। बदले में दादी माओं ने यह वादा किया जब तक स्तिथि नहीं सुधरती तब तक वे बाहर निकलने का जोखिम नहीं उठाएंगी। इस दौरान, 7 महीनों तक दादी माएं पूरी तरह सुरक्षित रहीं और कोविड-19 के संक्रमित होने से बची रहीं। इस पूरी अवधि में प्रांतकथा के युवाओं ने उनकी चिकित्सकीय मदद की और लगातार राशन की आपूर्ति की। इसमें स्थानीय पुलिस से भी जरूरी मदद मिली,नगर पालिका के अधिकारी व कोलकाता दक्षिण के कैबिनेट मंत्री ने भी सहयोग दिया।अदोर की सबसे स्मरणीय कहानी यह है कि कोलकाता में एक जाने-माने व्यक्तित्व कोविड-19 से बीमार व कमजोर हो गए थे। जब वे 38 दिन तक वेंटीलेटर पर रहने के बाद स्वस्थ हो गए, तब उन्होंने कहा कि वह दादी माओं की प्रार्थना और प्यार के कारण स्वस्थ हुए हैं, ऐसा उनका विश्वास है।

हाल में कुछ संस्थाएं, जो बच्चों के साथ काम करती हैं और घरों में देखभाल (केयर होम) का संचालित करती हैं, ने सहयोग मांगा। जरूरतमंद अभिभावकों ने अदोर से संपर्क करना शुरू किया, और महिलाओं को काम करने का प्रस्ताव दिया। इससे बच्चों की देखभाल करने के बदले में उनकी भी कुछ मदद हो जाएगी। कुल मिलाकर, अदोर को उम्मीद है कि आत्मनिर्भर समुदाय का सपना साकार होगा और दादी माएं भी असहाय व उदासीन नहीं दिखेंगी।

#प्यार #करुणा #देखभाल #एकजुटता

सबक

अदोर की यात्रा में सबसे महावतपूर्ण सबक़ यह है कि देखभाल और करुणा मूल्यवान है। यह बदलाव का ताकतवर माध्यम है और इन कहानियों में बदलाव की संभावना है।

हाशिये के वंचित लोगों और सुविधा प्राप्त लोगों के बीच प्रत्यक्ष संबंध विकसित करना, स्नेह का संपर्क बनाना, और इस टिकाऊ संबंध से सामाजिक विभाजन को तोड़ना और ज्यादा समावेशी और बेहतर समाज बनाना।

विशेषकर युवाओं के बीच में वंचित लोगों की आवाज सुनाई दे रही है। इस लम्बे रास्ते से चलकर आगे जा सकते हैं और इन अलग-थलग रह रहे वंचित लोगों के लिए कई विभाजनों को तोड़ सकते हैं।

संपर्क

बाप्पादित्य मुखर्जी, bappadityamukherjee1@gmail.com
https://prantakathaindia.org

--

सभी फोटो - प्रांतकथा टीम

सेल्फी में मुस्कान

चिन्हारी

मजबूत बनते संबंध, उम्मीद की खोज

देसी सब्जी खेती की तैयारी

लाख की खेती की तैयारी

चिन्हारी: द यंग इंडिया, युवा महिलाओं (पर पुरुषों का बहिष्कार नहीं) की सामूहिक पहल है, जो छत्तीसगढ़ के दूरदराज के इलाकों में पुरानी अच्छी परंपराओं को पुनर्जीवित करने का काम करती है। इस काम में धमतरी व कांकेर जिले के पांच गांवों की करीब सौ महिलाएं जुड़ी हुई हैं। चिन्हारी, टिकाऊ जीवन के तौर-तरीकों से सीख रही है, और गांवों के जीवन को रहने लायक व बेहतर बनाने की कोशिश कर रही है। चिन्हारी ने लोकतांत्रिक तरीके से इस मुहिम को जारी रखा है, उसका उद्देश्य, सामूहिक रूप (व्यक्तिगत मुखिया की तरह नहीं) से इसे करना है।

चिन्हारी, सामूहिक रूप से इन सवालों पर काम करती है:-

- युवा महिलाओं द्वारा पोषणयुक्त देसी सब्जियों की खेती
- महिलाओं के शारीरिक बदलाव – मासिक धर्म, प्रसव
- खुले शिक्षा केन्द्रों (ओपन लर्निंग सेंटर) से हाथ के काम से व्यावहारिक शिक्षा
- जंगल के साथ रिश्ते को पुनर्जीवित करने का हिस्सा है लाख की खेती, चित्रकला और कढाई-बुनाई, जो सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भी है

कोविड- 19 के डर और आर्थिक मंदी के बीच में चिन्हारी ने किस तरह स्थिति में बदलाव किया जाए, इसकी संभावना तलाश की। इसके बाद इन कामों की पहल की।

कोविड-19 के चिन्हारी की पहल

कोविड-19 और तालाबंदी का असर देश के अन्य हिस्सों की तर छत्तीसगढ़ के गांवों पर भी पड़ा। आर्थिक व मनौवैज्ञानिक स्तर पर इसका प्रभाव पड़ा। उनकी आमदनी के स्रोत सीमित हो गए। वे उनके घरों में कैद हो गए। गांव में और उसके बाहर मित्रो व रिश्तेदार से ना मिलने के गंभीर परिणाम हुए। सम्पर्क में आने का डर और जीवन में प्रत्येक दिन बीमारी के संपर्क में आने की आशंका बनी रही। पुराने संबंध और मानवीय लगाव संदेह के घेरे में आ गया।

ऐसी स्थिति में चिन्हारी की युवा महिलाओं का आपस में मिलना मुश्किल था। वे महामारी खत्म होने का इंतजार कर रही थी। लेकिन जब कुछ महीने बीत गए तब उन्हें एहसास हुआ कि इस बीमारी के डर के साथ ही रहना सीखना होगा। यहां तक कि जब तालाबंदी के दौरान लोग गांव में थे तब भी इस बीमारी के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता था। उन्होंने एक साथ आने व मिलकर सीखने के अन्य रास्तों के बारे में सोचना शुरू किया। जल्द ही उन्होंने युवा महिलाओं के साथ एक साझे लाउडस्पीकर फोन वाले से बातचीत शुरू की और शैक्षणिक आडियो सत्र लेने शुरू किए। इस श्रृंखला में उन्होंने इतिहास, मानव शरीर, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, टिकाऊ विकास आदि के बारे में संयुक्त रूप से जाना। युवा महिलाओं ने गांव की छोटी लायब्रेरी से, जो चिन्हारी ने हर गांव में बनाई है, से किताबें लीं, और पढ़ीं। इन किताबों में हेलेन नार्बर्ग की 'प्राचीनता का भविष्य', महात्मा गांधी की 'हिन्द स्वराज', और महाश्वेता देवी की दुनिया के आदिवासी जीवन की कहानियां इत्यादि शामिल थीं।

जब तालाबंदी बढ़ी और कोविड-19 के केस बढ़ते रहे,तब युवा महिलाओं ने चिंताओं से सृजनात्मक की ओर बढ़ने के लिए कुछ गतिविधियां शुरू कीं। कुछ ने चित्र बनाना शुरू किया, यह तात्कालिक सहज अभिव्यक्ति थी। महामारी के दौरान चित्रकला ने समूह को दो महत्वपूर्ण कारणों का बोध कराया।

- युवा महिलाएं अपने घरों में रेखाचित्र व चित्र बना सकती हैं, और इसके माध्यम से आपस मे जुड़ने की प्रक्रिया में शामिल हो सकती हैं। ड्राईंग व पेंटिंग के माध्यम से दूसरों को अपनी भावनाओं को साझा कर सकती हैं। रेखा व रंगों के माध्यम से वे एक दूसरे से जुड़ सकती हैं।
- चित्रकला उनकी अभिव्यक्ति का जरिया है, शायद वह उनकी चिंताओं को प्रकट करने का भी।

चिन्हारी के तीसरे न्यूजलेटर में उनके चित्र लिए गए हैं। इस कलात्मक रूप की ओर मुड़ना बहुत महत्वपूर्ण है, इसने कला और मानव विकास (न कि वस्तुओं और सेवाओं के विज्ञान पर) पर पुनर्विचार करने का मौका दिया है। कोविड-19 के संकट में अचानक मानव संबंधों पर फिर से सोचने का मौका दिया है। रेखाओं, वक्र, रंगों का उतार-चढ़ाव और रंगों के माध्यम से सामाजिक दूरी के समय उन्होंने मानवीय आत्मीयता को फिर से जगा दिया। युवा महिलाएं, जो अपने अचेतन में कई तरह के रंगों के उतार-चढ़ाव के साथ जीती हैं, उन्होंने उन्हें चित्रों के कलात्मक रूप में पाया। जीवन पूरी तरह फीका नहीं है, उसमें भी उम्मीद की रंग-बिरंगी किरणें हैं।

शौकिया कलात्मक रूप की संभावनाओं के अलावा, वर्ष 2020 के खरीफ सत्र में घर की बाड़ी में देसी सब्जियों की खेती की। इसके माध्यम से युवा महिलाओं ने उनके घर के आर्थिक बोझ को भी कम किया और उसे साझा करने की कोशिश की। यह पहल वर्ष 2019 से शुरू की गई। वर्ष 2018 की स्वास्थ्य जांच में ज्यादातर युवा महिलाओं में खून की कमी पाई गई। इससे उन्होंने ऐसी खेती की पहल की जिससे उन्हें अच्छा पोषण मिले। उनके परिवार में न केवल देसी धान की खेती को बढ़ावा मिला, बल्कि देसी सब्जियों की खेती करने का भी निर्णय लिया। देसी चावल और देसी सब्जियों में पोषक तत्व ज्यादा होते हैं। चिन्हारी, जंगलों में निवासरत लोगों की खाद्य परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए सघन रूप से काम कर रही है (इसमें वसुधा की मदद मिल रही है)।

#उम्मीद #महिलाओंकीकहानी #ग्रामस्वराज

इसी समय, युवा महिलाओं को अपने जंगल से प्रेरणा व सीखने का मौका मिला। जंगल, आदिवासियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। चिन्हारी ने पाया कि वनों में रहनेवाले समाज के युवा, आदिवासी और जंगल के रिश्ते को बदल सकते हैं, इस पर पुनर्विचार करने का जरिया बन सकते हैं। विशेषकर, ऐसे समय जब बाजार ही बदलाव का मुख्य स्रोत बन गया है। युवाओं ने जंगल के इतिहास का मोटा-मोटी अध्ययन किया। इसमें उन्होंने सीखा कि जंगल में विविध तरह के वन उत्पाद होते हैं, कुछ इनमें से खो गए हैं। इनमें से एक है लाख। वर्ष 2020 में युवा महिलाओं ने लाख की खेती करना सीखा (इसमें सेन्टर फार डेवलपमेंट प्रेक्टिस ने मदद की) और लाख की खेती की प्रक्रिया शुरू की। युवा महिलाओं ने लाख की खेती के लिए लाख कीड़ा को पाला और उसका पालन-पोषण किया।

विरोधाभासी तरीके से महामारी ने उम्मीद की खिड़की खोली। इसने यह दिखाया कि इसके परिणामस्वरूप, दुनिया (विशेषकर ग्रामीण और गरीब) राज्य, बाजार और शहरों पर निर्भर है। चिन्हारी ने महामारी के दौरान अपने काम से ग्रामीण आत्मनिर्भरता (गांधीवादी ग्राम स्वराज) का रास्ता दिखाया।

सबक

समुदाय के बीच ऐसे संबंध विकसित करना जो अप्रत्याशित उथल-पुथल व संकट के दौर में मददगार हों। समुदायों की प्राथमिक जरूरत आत्मनिर्भर गांव बनाने की है।

कला, सिर्फ अपनी चिंताओं को ही अभिव्यक्ति देने में भूमिका नहीं निभाती, बल्कि यह समुदायों को साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कम चिंतित दिमाग दूसरों के प्रति सचेत रहता है, और दूसरों के बिना समुदाय बनना भी मुश्किल है।

संपर्क

स्वर्णिमा कृति, swarnimakriti92@gmail.com
www.chinhari.co.in

कृपया इसे भी देखें:
'होप इन द टाइम्स आफ पेनडेमिक', वीडियो देखें: https://youtu.be/HbDPeuRf9SA

--
सभी फोटो: अमित शेहरावत

चैनल 5

आनलाइन श्रुति मंच

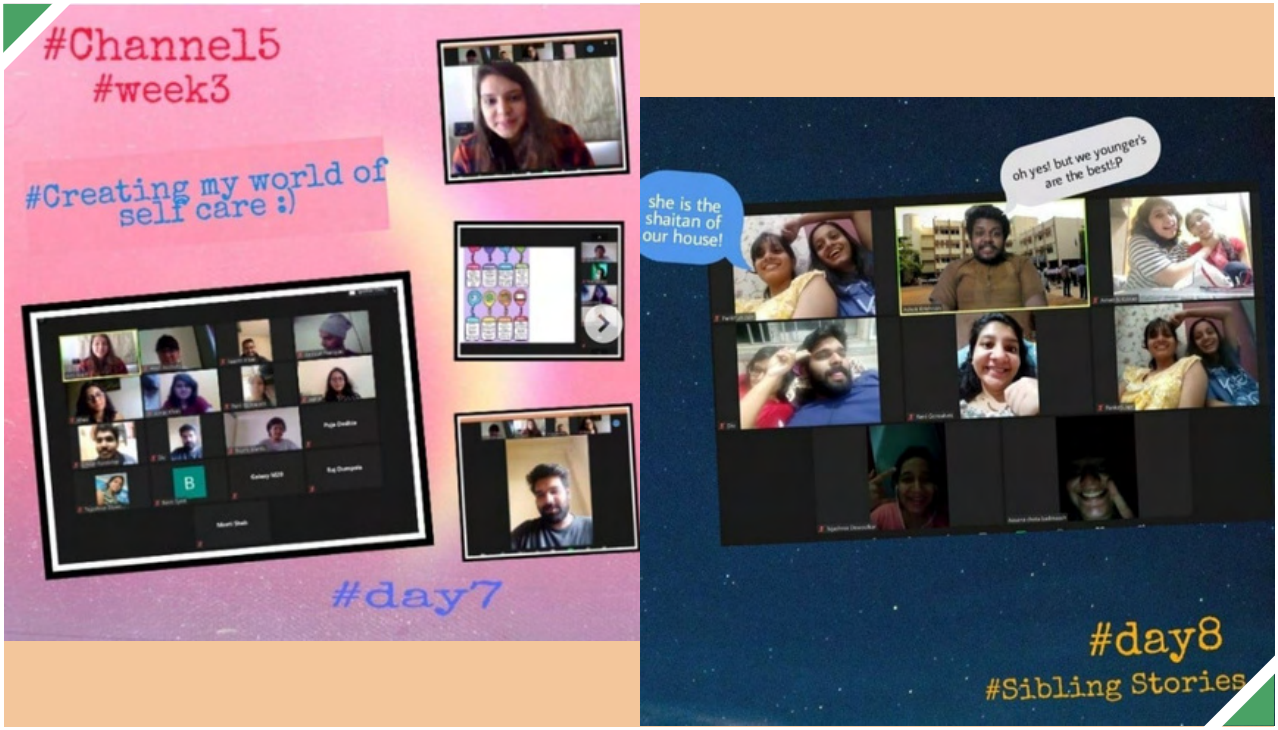

चैनल 5 का ऑनलाइन सत्र

ब्लू रिबन मूवमेंट (बीआरएम) मुंबई स्थित युवाओं के नेतृत्व में चलनेवाला आंदोलन है, जो बेहतर दुनिया के लिए युवा नेतृत्व तैयार करने और समुदाय से जोड़ने का काम करता है। वह लोकतंत्र में गहरा विश्वास करता है और 100 फीसदी सहमति आधारित निर्णय प्रक्रिया को व्यवहार में लाता है।

मनुष्य, सहज रूप से सामाजिक प्राणी और खोजकर्ता है। अत्यधिक डर के समय जब संकट गहरा हुआ तब देखभाल और सहायता व्यवस्था की जरूरत थी। चैनल-5 श्रुति मंच (आनलाइन लिसनिंग स्पेस) का पहला उद्देश्य कोविड-19 और तालाबंदी के दौरान महामारी से मुकाबला करने में उन्नकी सहायता करना था। व्यक्तियों की सामाजिक-भावनात्मक अच्छी सेहत व बेहतरी के लिए समुदाय के सहयोग से काम किया, क्योंकि यह समझ आया कि सामान्य स्थिति बहाल होने में समय लगेगा। शहरी क्षेत्रों में ज्यादा मदद की जरूरत थी, जो बहुत कटा हुआ और कांक्रीट की दीवारों से घिरा हुआ है, और यहां आमतौर पर सामाजिक संबंध अर्थपूर्ण नहीं हैं।

कोविड-19 और तालाबंदी के मद्देनजर, जो राष्ट्रव्यापी घोषित की गई थी, ब्लू रिबन मूवमेंट के सदस्य ऐसे लोगों के पास गए, जो विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिनके पास इंटरनेट की सुविधा थी, और जिनकी आनलाइन संवाद की क्षमता थी। इस टीम ने कई तरह के संवादी व श्रुति मंचों का आयोजन किया। कुछ संवाद कार्यक्रम युवा बिरादरी के लिए आयोजित किए और कुछ संवाद वयस्क समुदाय के लिए आयोजित किए, जो ज्यादा जाने बूझे थे। विविध संबंधों को साथ रखना और सामूहिक शक्ति से इसे आगे बढ़ाना और समुदाय के लिए आनलाइन साथ आकर सहायता करना।

#समुदाय #मददगारप्रणाली #श्रुतिमंच

वर्ष 2020 में 27-28 मार्च को बी आर एम ने कार्यकर्ताओं के लिए चैनल 5 आनलाइन श्रुति मंच के पहले संस्करण का आयोजन किया। इस सत्र को युवा नेताओं ने आगे बढ़ाया। इसमें लोग किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, संकट को किस तरह से समझें, और एक साथ मिलकर किस तरह से काम करें, इत्यादि पर बातचीत हुई। इसमें अलग-अलग जगहों से 50 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए, जिन्होंने शामिल होने की पेशकश की थी। इनमें से कुछ ने एक सत्र के बाद भी इसे जारी रखा। जिन प्रतिभागियों ने सत्र में भाग लिया, उन्होंने यह जानने की कोशिश भी कि पूरी दुनिया में क्या हो रहा है। उन्होंने यह पाया कि यह स्थान शांतिपूर्ण है, जिसके जरिए वे अपनी मन की भावनाएं व विचार व्यक्त कर सकते हैं। एक प्रतिभागी, जो अपनी कार में घंटों बैठे रोता रहा, क्योंकि उसके पास अपनी जटिल भावनाओं को व्यक्त करने के लिए शब्द ही नहीं थे, जो उसने अनुभव किया था। तभी से वह इसका नियमित प्रतिभागी हो गया।

अप्रैल में चैनल 5 का दूसरा सत्र चला। इसमें करीब 60 प्रतिभागियों ने पूरे तीन दिन हिस्सा लिया, जिसमें कई सत्रों में जीवन से जुड़ी कई कहानियां सुनी और साझा कीं। इन सत्रों में किसी ने भी समस्याओं के समाधान पर जोर नहीं दिया। चैनल5 में प्रतिभागियों को अपनी चिंताओं को साझा करने और आप अकेले नहीं हैं, यह सुनिश्चित करने का मौका दिया गया, अभिव्यक्त करने की पेशकश की गई।

अंत में, जून महीने में तीसरे सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर से 150 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। ज्यादातर प्रतिभागियों ने शब्दों से ज्यादा जुड़ाव किया। प्यार व गर्मजोशी से भरा उनका उत्साह गहरा था। इस संस्करण का सत्र श्रुति से लेकर संवाद, खुद की देखभाल, आधीरात्रि तक भाई-बहनों, स्नेह और प्रेम पर बातचीत आदि पर चर्चा हुई। इसके बाद प्रतिभागियों ने इन सत्रों का उनके लिए क्या मतलब था, इस पर अपनी प्रतिक्रिया साझा की। इनमें से कुछ उद्धरण यहां दिए जा रहे हैं।

“चैनल 5 का हिस्सेदार बनना, शुरूआत से ही मजेदार था, इससे मैंने जीवन के अलग-अलग पहलुओं के बारे काफी कुछ हासिल किया। चैनल 5 का धन्यवाद।" – दिव्या रावल

“चैनल 5 एक सुंदर जनसमूह था, यह कुछ वैसा ही था, जैसा मुझे जरूरत थी।” – सिद कुवावत

वर्ष 2020 में सितंबर और अक्टूबर महीने में चैनल 5 ने 3 सत्र आयोजित किए। इन सत्रों में प्यार से लेकर पाप संस्कृति और गर्मी की छुट्टियां, आदि पर रोशनी डाली गई। जो व्यक्ति प्रतिभागी थे, उन्हें उनकी आसपास की दुनिया की कहानियों को अभिव्यक्त करने का मौका दिया। इससे कुछ हद सामान्य स्थिति की वापसी हो रही है। यह कमाल की बात थी कि लोगों ने इस मंच का भरोसा किया और कई अलग-अलग कहानियां साझा कीं। ज्वलंत कहानियां से लेकर प्यार खट्टा हो गया, दादा-दादी के साथ गर्मी की छुट्टियां, जिनकी वयस्क अब कमी महसूस कर रहे हैं, इत्यादि। प्रतिभागियों मे एक पूजा कहती हैं कि “चैनल 5 ने ऐसे अनूठे विषयों को छुआ, जिन पर आमतौर पर बातचीत नहीं होती है। सत्र बहुत अच्छे से संचालित किए गए थे, समन्वयकों ने प्रतिभागियों के लिए पूरा मौका दिया और उन्हें अपने मत को अभिव्यक करने को संभव बनाया।”

#समुदाय #मददगारप्रणाली #श्रुतिमंच

आसना शाह, जो कार्यक्रम की ऐंकर थीं और बीआरएम की युवा सदस्य हैं, ने बताया कि “यह स्थान सचमुच मेरे ह्दय के करीब था। यह हमारी दुनिया के लिए प्रस्तुति व समर्पण का तरीका था, समुदाय को फिर से जोड़ने का तरीका था, इसे विकसित करने के लिए युवा समन्वयकों ने यह कार्यक्रम आयोजित किया।”

सबक

चैनल 5 की पहल द्वारा सुरक्षात्मक उपायों के लिए युवाओं को रचनात्मक तरीके से जोड़ा गया, जो बहुत महत्वपूर्ण था। इस पहल को आगे बढ़ाया गया। इससे यह भी पता चलता है कि यह उपचारात्मक उपायों से कितनी महत्वपूर्ण है, जो बाद में किए गए।

समाज गहराई से इसमें विश्वास करता है कि अच्छे कामों की कीमत धनराशि है। लेकिन ऐसी पहल यह बताती है कि समूह के लोग जरूरत महसूस करें, और स्वैच्छिक रूप से ऐसे कामों में ऊर्जा लगाएं तो बहुत सघन रूप से काम हो सकता है। समूह के लोग गंभीरतापूर्वक इससे जुड़े और इसे स्वैच्छिक ऊर्जा से आगे बढ़ाएं तो बहुत मूल्यवान और प्रभावकारी काम हो सकता है।

संपर्क

आसना शाह, aasana@brmworld.org
https://brmworld.org/

श्रमिक सम्मान

प्रवासी मजदूरों के लिए ग्रामीण आजीविका में सहायता

बिहार में तेल निकालने की कच्ची घानी

फरीदाबाद में बांस के बर्तन बनाती महिलाएं

जब राष्ट्रव्यापी तालाबंदी हुई तब देश अधिकांश प्रवासी मजदूर असहाय हो गए, और बिना किसी बुनियादी सहायता के गरिमाहीन तरीके से शहरों को छोड़ने लगे। महामारी के समय गैरबराबरी सामने आ गई। बिलाल खान, जो 29 वर्षीय मुम्बई स्थित आवास अधिकार कार्यकर्ता हैं, ने इस मुद्दे पर ध्यान दिया। वर्ष 2020 में मार्च महीने में राहत कार्य का शुरू हुआ। उस समय राहत कार्य की जल्द व तत्काल जरूरत थी। तालाबंदी के दौरान जरूरतमंदों तक खाद्य और स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाई गईं।

तालाबंदी ने लाखों प्रवासी मजदूरों को सैकड़ों और हजारों किलोमीटर पैदल चलकर अपने गृहग्राम लौटने पर मजबूर किया। यह मजदूर अपना रोजगार खो चुके थे। और उन्हें नए सिरे से रचनात्मक कामों में जोड़ने की जरूरत थी। श्रमिक सम्मान (श्रम की गरिमा) प्रोजेक्ट अगस्त में शुरू हुआ। इसे बिलाल और उनके दोस्त लारा जेसमानी (मानव अधिकार अधिवक्ता) और अनिल हब्बार (व्यवसायी) ने शुरू किया था। इसका उद्देश्य रोजगार सृजन करना और प्रवासी मजदूरों को आजीविका व आर्थिक अवसर प्रदान करना है। उनका मानना है कि पलायन का कारण मौजूदा विकास का माडल है, जो सिर्फ शहर केन्द्रत है। यह शहर जैसे कुछ हिस्सों में ही रोजगार के अवसर, सुविधाएं और सेवाएं मुहैया कराता है।

श्रमिक सम्मान की सोच महात्मा गांधी के विकेन्द्रीकृत विकास के माडल के अनुरूप है, जिसमें छोटे कस्बों व गांवों में भी ग्रामीणों को आजीविका मिल सकती है। जिससे लोगों को रोजगार की तलाश में, उनके गांव घर छोड़ने को मजबूर न होना पड़े। और बड़े शहरों में दयनीय स्थिति में न रहना पड़े, जहां न रोजगार की सुरक्षा है और न ही उनकी सुनिश्चितता है। स्थानीयकरण पर जोर देना चाहिए, जिसका अर्थ है कि लोग संसाधनों का इस्तेमाल कर सकें और रोजगार का अवसर मिले। इस स्थानीय बाजार आधारित काम में बड़े पैमाने पर पर्यावरण का नुकसान भी न हो, यह ख्याल रखा जाए।

#आजीविका #स्थानीयकरण #ग्रामस्वराज

जनसहयोग से दान व धनराशि जमा करने की मुहिम (क्राउड फंडिंग कैम्पेन) की पहल हेल्पिंग हेंड चेरिटेबल ट्रस्ट के साथ अभिनेता मनोज वाजपेयी और उनकी पत्नी शबाना रजा द्वारा की गई। वर्ष 2020 में भारत में, स्वतंत्रता का 74 वां वर्षगांठ वर्ष था। इसी के मद्देनजर श्रमिक सम्मान का उद्देश्य इस साल 74 उद्यमों को आर्थिक मदद देना था। 30 आजीविका उद्यमों को आर्थिक सहायता देने का लक्ष्य रखा गया, जो झारखंड, बिहार, हरियाणा, त्रिपुरा, गुजरात, और महाराष्ट्र में थे। इनको ज्ञान, मार्गदर्शन और संसाधनों से सहायता की गई।

सहायता के लिए चयनित करने के कुछ मापदंड का अनुसरण किया गया है:

- गतिविधियों में ईमानदारी, निष्पक्षता और पारदर्शिता दिखनी चाहिए।
- सभी तरह के लेन-देन बिना किसी कपटपूर्ण इरादे से किए जाएं।
- हाथ से काम करनेवाले, अकुशल, अस्थाई मजदूरों को रोजगार दिया जाए।
- स्थानीय संसाधनों और ज्ञान का इस्तेमाल किया जाए।
- कौशल विकास, रोजगार क्षमता सृजन और नए उपक्रम को सहायता मुहैया कराना।
- नवाचारी और पर्यावरण के अनुकूल और कम कार्बन उत्सर्जन के साथ काम करना।
- टिकाऊ और अनुकरणीय।

इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बांस के बर्तन बनाने के लिए, खुद की देखभाल के उत्पाद जैसे साबुन, तेल, इत्यादि बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। बिहार, त्रिपुरा और मुंबई कार्यक्रम हुए। इनमें से एक कार्यक्रम बिहार में हुआ जिसमें किसानों को जैविक खाद बनाने में मदद की, जिससे वे अपने खेत में खुद के द्वारा बनाई जैव खाद का इस्तेमाल करें। रासायनिक खाद पर निर्भर न रहें, जो महंगी और पर्यावरण व फसल के लिए विषैली होती है। बिहार के भागलपुर जिले के बीहपुर गांव में कच्ची घानी (तेल निकालने की मशीन) स्थापित की गई है, जिससे स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार मिला है, और किसानों को प्रत्यक्ष रूप से बाजार मिला है।

एक और उद्यम है वंशवारा समुदाय की महिलाओं के लिए, जो फरीदाबाद में है, जो यहां राजस्थान और मध्यप्रदेश से पलायन करके आई हैं और वे परंपरागत रूप से बांस और बेंत के सामान बनाती हैं, जैसे टोकनी, चटाई इत्यादि। इन महिला मजदूरों की बहुत कम कमाई हो गई थी, कोविड-19 और तालाबंदी में इन्होंने सब कुछ खो दिया। इस दौरान इनकी कोई आमदनी नहीं हुई, यहां तक कि उनके पास दैनिक खाद्य जरूरतें पूरी करने के लिए भी पैसे नहीं थे। ऐसे में श्रमिक सम्मान इनकी मदद के लिए आगे आया, और फिर से बांस के सामान बनाने में मदद की। 17 महिलाओं को रोजगार और आजीविका प्राप्त हुई। टोकनी और अन्य बांस के बर्तनों के माध्यम से रोजगार मिला, जिन्हें उन्होंने दिल्ली और फरीदाबाद में बेचा। गुलाब कली, गेंदो, राम कली और अन्य महिला मजदूर, जिन्होंने फिर से इस उद्यम के मारफत काम शुरू किया, आज खुश हैं, क्योंकि जो काम उन्हें पसंद था उसे वे कर रही हैं और परंपरागत कौशल के आधार पर आजीविका कमा रही हैं, और जीवन निर्वहन कर रही हैं।

#आजीविका #स्थानीयकरण #ग्रामस्वराज

कुछ अन्य उद्यम हैं, जिन्हें सहायता दी गई, और वे हैं कुक्कट फार्म, खाद्य स्टाल, कपड़े की दुकान, फर्नीचर दुकान, मास्क बनाना इत्यादि। इन 30 उद्यमों से 500 से ज्यादा लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव हुआ है। इसके अलावा, और भी उद्यमों को आर्थिक सहायता देने की प्रक्रिया जारी है, आनलाइन मंच बनाया जा रहा है जिससे स्थानीय उत्पादों की बिक्री और उत्पादन जैसे क्षेत्र को भी बढावा मिले।

स्थानीय आजीविका को बढ़ावा देने के साथ ही श्रमिक सम्मान की टीम अलग-अलग स्थानीय मुद्दों को भी समझने का काम कर रही है, जिसके कारण पलायन होता है। उदाहरण के लिए इस पर ध्यान दिया गया कि बिहार के अधिकांश प्रवासी जो पलायन करते हैं, वे खेती व खुद की जमीन से जुड़े रहे हैं। पर हर साल बाढ़ के कारण खेती असुरक्षित व अस्थिर हो जाती है। इसके कारण लोग शहरों की ओर रोजगार की तलाश में पलायन करते हैं।

सबक

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि पलायन के पीछे के कारणों का पता चला। और फिर उन कारणों पर ध्यान दिया गया, न कि सिर्फ उसके प्रभाव पर। बड़ी संख्या में श्रमिक सम्मान को यह सुझाव प्राप्त हुए हैं कि लोग आत्मनिर्भर होना चाहते हैं और गरिमापूर्ण तरीके से अपना जीवन जीना चाहते हैं। पर स्थानीय स्तर पर किसी भी उपक्रम को फलने-फूलने व पनपने के लिए पर्यावरण सहायक होना चाहिए। इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है कि देश के दूरदराज के इलाकों में आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने के लिए पूरी ताकत लगाने की जरूरत है।

संपर्क

बिलाल खान, bilalkhan3639@gmail.com
http://www.helpinghandsct.org

कृपया इसे भी देखें:
https://www.facebook.com/Shramik-Sammaan-108008767667503

--
सभी फोटो- श्रमिक सम्मान टीम

ग्रीन वार्मस

कचरा प्रबंधन से आजीविका

हरिता कर्म सेना की महिलाएं कचरा एकत्र करते हुए

ग्रीन वार्मस, एक सामाजिक प्रभाव- उन्मुख कचरा प्रबंधन संस्था है, जो कोझीकोड के बाहर स्थित है। इसका सिद्धांत कम से कम कचरा उत्पादन, जमीन में गड्ढों भराई से कचरा प्रबंधन को बदलना, और समुद्र और कचरा प्रबंधन क्षेत्र में कार्यरत लोगों को गरिमा व सम्मान देना। इसमें शून्य अपशिष्ट ईंधन का दृष्टिकोण है। ग्रीन वार्म, वैज्ञानिक व्यवस्था के साथ कचरा प्रबंधन के लिए शासकीय इकाईयों, निजी कंपनियों, ब्रांड मालिकों और सामुदायिक संगठनों के पास तक पहुंच रहा है। ग्रीन वार्म की विनम्र शुरूआत हुई। जाबिर काराट, केरल के दूरदराज गांव के एक युवा हैं, जिन्होंने जमीनी स्तर से कचरा प्रवंधन सीखने की शुरूआत की। जाबिर, ग्रीन वार्मस के संस्थापक हैं, उन्होंने वर्ष 2014 में कुछ महीने कचरा बीननेवालों के साथ काम किया, इससे उन्होंने गहराई से इस मुद्दे को समझा, जो वे काम करना चाहते थे।

कचरा प्रवंधन कंपनी के तौर पर उनके काम के सफर की शुरूआत होती है और इसका अंत भी इसी से होता है। वे 85 फीसदी कचरे का प्रबंधन गैर जैव विघटन, गैर पुनर्चक्रण करते हैं। इस कचरे का स्रोत घरों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठान, उद्योग और (जो वस्तुएं बाजार में प्रतिदिन तेजी से बिकती हैं उन्हें एफएमसीजी कहा जाता है), ब्रांड और दवा कंपनियां हैं। उन्होंने पिछले 5 साल में 27,720 टन कचरे का पुनर्नवीनीकरण सफलतापूर्वक कर लिया है।

ग्रीन वार्मस, अपने ग्राहकों के लिए शून्य अपशिष्ट का आयोजन भी करती है, जहां सभी उत्पन्न कचरे का पुनःउपयोग, पुनर्नवीनीकरण और खाद बनाया जाता है, जिससे किसी भी कचरे को जमीन के गड्ढों में नहीं डाला जाता। संस्थानों के लिए शून्य अपशिष्ट पर जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों की सोच यह होती है कि पहले स्थान पर ही खपत को कम करें। वे महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को भी सहायता करते हैं। कचरा प्रबंधन संयंत्र चलाने में उनका प्रशिक्षण और साथ देना, जिससे वे अपशिष्ट उद्यमी बनें।

#आजीविका #कचराप्रबंधन #महिलाओंकीकहानियां

कोविड-19 में पहल

कोविड-19 के साथ एकल उपयोग और उपयोग करके फेंकनेवाली चीजें बढ़ी हैं। इसका मतलब यह हुआ कि ज्यादा कचरे का प्रबंधन हुआ। बड़े पैमाने पर ग्रीन वार्म ने हस्तक्षेप किया। स्थानीय स्वशासन इकाईयों के सहयोग से ग्रीन वार्म ने नगरपालिका के ठोस कचरे का शुरू से अंत तक प्रबंधन किया। ग्रीनवार्म, उन पंचायत और नगरपालिका तक पहुंची, जो कचरा प्रबंधन मे कमजोर थीं और उनकी सेवाएं चाहती थीं। वर्ष 2020 में ग्रीन वार्म ने 19 पंचायतों और नगरपालिकाओं (जिसमें से 10 केरल, 5 ओडिशा, 2 तमिलनाडु, 1 आंध्रप्रदेश, 1 तेलंगाना शामिल हैं) को सहयोग किया। इससे न केवल पंचायतों व नगरपालिका को कचरा प्रबंधन में मदद मिली, बल्कि इससे रोजगार के अवसर भी मिले। विशेषकर, उन युवाओं को जो इनके इच्छुक थे । इससे स्वयं सहायता समूह की 200 महिलाओं को आजीविका हासिल हुई। जैसे ही इस काम का विस्तार हुआ, ग्रीन वार्म ने 9 कर्मचारियों को नियुक्त किया, जिसमें से एक प्रशिक्षु था और चार फेलो थे। सभी युवाओं की आयु 20 से 31 के बीच थी। यह वह समय था जब तालाबंदी के बाद बहुत सी संस्थाओं, कंपनियों व अन्य क्षेत्रों के लोगों को नौकरियों से निकाला जा रहा था।

केरल के मलप्पुरम जिले की चुंगाथारा पंचायत उनमें से एक है, जिसकी कोविड-19 के दौरान ग्रीन वार्म ने सहायता की थी। यहां महिलाओं की मासिक आमदनी सिर्फ 2000 रूपए थी। और तालाबंदी के दौरान घरों से कचरे का एकत्रीकरण भी बाधित हो गया था। उसी समय, पहले से इकट्ठे कचरे का ढेर भी लगा था। ऐसे परिस्थिति में ग्रीन वार्मस ने हस्तक्षेप किया। प्रशिक्षण और कचरे की वापसी खरीद में सहायता की। पूर्व में, उनकी आमदनी का 80 प्रतिशत घरों से कचरा एकत्रीकरण से आता था, पर इसमें से 60 प्रतिशत उसके पृथक्करण में चला जाता था। अब कचरे की वापसी खरीद की गारंटी है जिससे मासिक आमदनी बढ़ गई है। अब उन महिलाओं की कमाई प्रतिदिन 350 रूपए हो गई है। इससे कई परिवारों को मदद मिली है, इनमें से कुछ परिवार में महिलाएं ही मुख्य कमानेवाली हैं, तालाबंदी के दौरान उनके पतियों व परिवारजनों ने आजीविका व रोजगार खो दिया था।

स्वयं सहायता समूह व कर्मचारियों के लिए सुरक्षा मानकों पर जागरूकता सत्र आयोजित किए गए, सभी जमीनी कार्यकर्ताओं को स्वच्छता व सुरक्षा सामग्री दी गई। इससे घर-घर जाकर कचरा एकत्र करने का काम फिर से शुरू हुआ। पहले कचरे को पुनर्नवीनीकरण करनेवाले अस्पताल से कचरा लेने के अनिच्छुक थे, लेकिन अब पृथक्करण के मानक पुनर्गठित किए गए। और कीटाणुरहित कचरे को एकत्र किया गया। कचरा एकत्रीकरण, पृथक्करण, और यातायात के समय सभी तरह के बचाव अपनाए गए। इससे जिम्मेदारानापूर्ण कचरा प्रबंधन की मांग उठी। ओडिशा, अंडमान, निकोबार द्वीपसमूह और लक्षद्वीप में यह काम शुरू हुआ। ग्रीनवार्म द्वारा वर्ष 2020 में अप्रैल से दिसंबर तक 5000 एमटी कचरे का प्रबंधन किया गया।

#आजीविका #कचराप्रबंधन #महिलाओंकीकहानियां

सबक

संकट के समय उससे मुकाबला करने का मौका मिला, बहुत महत्वपूर्ण है। बदली हुई परिस्थिति और नई चुनौतियों का सामने से सकारात्मक सामाजिक प्रभाव हो सकता है।

Contact

जाबिर काराट, jabir@greenworms.org
http://www.greenworms.co

'5 इयर जर्नी आफ ग्रीन वार्म प्रोवाइडिंग होप, डिग्निटी एड एम्पलायमेंट', नामक वीडियो देखें:
https://youtu.be/u12SXD865LI

--
सभी फोटो: धीनेश वेरोना

पलपट्टा गांव की महिलाएं कचरा पृथक्करण करते हुए

स्वराज की खोज

सकारात्मक कार्रवाई की दिशा में संवाद

स्वराज की खोज का जूम सत्र

वर्ष 2020 के मार्च महीने में जब राष्ट्रव्यापी तालाबंदी हुई थी, तब अशिक कृष्णन को लगा था कि यह लम्बा चलेगा और सामान्य स्थिति फिर से बहाल होने में समय लगेगा। उन्होंने स्वराज के विचार को, एक नजरिया के रूप में समझने की कोशिश की, उसके साथ जुड़कर और पिछले दो बरसों से उसे जीवन में अपनाकर देखा, और यहां तक कि वह अब तक उनके अंदर जिंदा है। उनका मानना है अधिकांश चुनौतियों का जवाब स्वराज में है। उन्होंने देखा कि आधुनिक दुनिया में जैसे सत्ता और शक्ति का केन्द्रीकरण, संसाधनों तक पहुंच में गैरबराबरी, प्राकृतिक पारिस्थितिकीय तंत्र का क्षरण, सूचना व ज्ञान का संग्रह,व्यवस्था का केन्द्रीकृत संचालन, वर्ग संघर्ष इत्यादि। इन सबका जवाब स्वराज में है। जैसे बहुलवादी दृष्टिकोण,स्वशासन,आत्मनिर्भरता, संप्रभुता, स्वायत्तता की तलाश की। कोविड-19 की कई तरह की पाबंदियों के बावजूद यह कर पाना मुमकिन हुआ।

ट्रवलरस यूनिवर्सिटी, असिक इस संस्था के सह निर्माता हैं, उन्होंने आनलाइन स्टडी सर्कल की पहल शुरू की और स्वराज के विचार की सैद्धांतिक व व्यवहार दोनों की तलाश की। ट्रवलर यूनिवर्सिटी एक मंच है, उनके लिए जिनकी दिलचस्पी ज्ञान को गहराई में जानने और खुद को और दुनिया को समझने में है, और जो सीखने के विकल्प तलाश रहे हैं। अकादमिक काम से बाहर व्यक्तियों के काम को बढ़ावा देना और जीवन में ऐसे सवालों का सामना करना, जिससे आप बेचैन हैं, और मिलकर काम करना जिससे सवालों के जवाब मिलें। स्टडी सर्कल ने 7 सत्रों की योजना बनाई। इन सत्रों में बातचीत को सुगम बनाने के लिए मोहनदास करमचंद गांधी की हिन्द स्वराज या इंडियन होम रूल नामक पुस्तक का इस्तेमाल किया गया। इस कार्यक्रम में 9 प्रतिभागी शामिल हुए, जो युवा थे और वह अपना रास्ता बनाने व उसे परिभाषित की प्रक्रिया में थे।

इनमें से कुछ समान सूत्र थे जो प्रतिभागियों को आपस में जोड़ते थे, यह सब टिकाऊपन के सवाल से संबद्ध थे और उसमें रूचि रखते थे। वे या तो इस काम को कर रहे थे या वैकल्पिक शिक्षा माडल की तलाश कर रहे थे। और उन सबके मुख्यधारा के विकास और प्रगति पर सवाल थे। इस कार्यक्रम ने अपना स्वयं का पाठ्यक्रम बनाया और स्वयं ही दो महीने में 19 सत्र आयोजित किए।

'स्वराज की खोज' (Exploring Swaraj) के तहत् प्रतिभागियों के साथ कई तरह के संकटों पर बातचीत होती, जो अपने आसपास देखते हैं। प्रतिभागियों के समूहों ने सामूहिक रूप से विषय व सवाल बनाए, जिनसे वे जुड़ना चाहते थे। और आगामी दिनों में उन्होंने यह तलाश की कि स्वराज के विचार का, उनके लिए क्या अर्थ है, और वे उनके स्वराज को कैसे परिभाषित करेंगे, और वास्तविक बहुलता में कैसे देखेंगे।

इसकी कुछ सामान्य समझ निम्न बिन्दुओं में है:

- व्यक्ति के रूप में खुद की जागरूकता
- व्यक्ति के रूप में खुद की जागरूकता की जरूरत व चाह
- व्यक्ति के रूप में कार्यान्वयन का स्वामित्व और जिम्मेदारी लेना
- आत्मनिर्भर और स्वावलंबी समुदाय
- स्थानीयकरण – स्थानीय अर्थव्यवस्था व स्थानीय ज्ञान व्यवस्था आदि को प्रोत्साहन
- व्यक्ति के रूप में प्रकृति के साथ संबंध की समझदारी
- विविध व्यवस्था के परस्पर संबंध की समझदारी और उसमें अपनी भूमिका
- दुनिया में आशा व उम्मीद जगाने का ढांचा और प्रक्रिया

'हिन्द स्वराज' की विषय-वस्तु पर आधारित संवाद किया गया और इस पर प्रतिभागियों ने विचारशील सवाल पूछे। जैसे मशीनों के इस्तेमाल का विस्तार, भविष्य की तरह अपने लिए कल्पना करना इत्यादि। प्रतिभागियों की साझा की हुई चर्चा में से समानताएं व फर्क को देखना, और एकराय तक पहुंचे और इस सामूहिक सपने का पीछा किया।

वे विविध व्यवस्थाओं के साथ अपने संबंधों को देखते हैं, जो उनके हिस्से हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में जो चाहता है, उसके लिए कदम उठाता है, और दावा या प्रतिदावा की स्वराज यात्रा बढ़ती जाती है। कुछ खाना बनाना सीखते हैं, कुछ अपने लिए सब्जियां उगाते हैं, कपड़ों में कमी करते हैं, अपने उपभोग स्वरूप का विश्लेषण करना, घरेलू उपचार व जड़ी-बूटियों से इलाज का पता लगा रहे हैं। इसके बाद क्रमशः प्रतिभागी जो काम करना चाहते हैं, उससे जुड़े विचार साझा करने का मौका दिया जाता है। और उनकी अपनी स्वराज की परिभाषा व सोच की ओर पहुंचने के लिए सक्षम बनाने की कोशिश की जाती है। और इसके लिए समूहों से सहायता लें। इस तरह प्रत्येक प्रतिभागी अपने विचार को समूह के समक्ष प्रस्तुत करता है, विचार रखनेवाले महत्वपूर्ण सवाल रखते हैं। और उसके बाद उन्हें सहायता मिलती है, जैसे कौशल, संसाधन, दक्षता इत्यादि।

जो विचार साझा किए हैं उनमें अलग-अलग प्रतिभागी जमीनी एकराय और तालमेल पाते हैं। इसके बाद सामूहिक सोच के साथ मिलकर काम करते हैं और सह सृजन करते हैं।परिणामस्वरूप, इस कार्यक्रम के माध्यम से तीन उद्यम सामने आए। तीन प्रतिभागी महिमा ठाकुर, ऐश्वर्या प्रदीप और आदर्श मोहनदास एक साथ आए। और उन्होंने 'आत्मना' की रूपरेखा बनाई। आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने की पहल की। टिकाऊ तरीके से कई उत्पाद बनाए। रासायनिक मुक्त उत्पाद, दैनंदिन इस्तेमाल होनेवाली चीजें और स्वयं के देखभाल के सामान बनाए- जैसे केशतेल, दंत मंजन, शैम्पू और स्नान पाउडर इत्यादि। एक अन्य कार्यक्रम साप्ताहिक वेबीनार की श्रृंखला भी आयोजित की। जिसमें 16 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। पहले कार्यक्रम की सफलता के बाद पुनः इसे आयोजित किया गया। अन्य 16 प्रतिभागियों के साथ संचालित किया। महिमा ठाकुर ने 'मीटिंग सेल्फ' कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई और इसे संचालित किया। इस कार्यशाला में सवाल, सजगता और दैनंदिन जीवन के माध्यम से अपने आपसे से जोड़ा। आशिक ने ऐश्वर्या प्रदीप और आदर्श मोहनदास के साथ लर्निंग सिटी त्रिस्सूर की पहल की। उनका विचार इसे 2 साल से अधिक चलाने का था, इस अवधि के दौरान इसे शहर आधारित, संदर्भ आधारित और जीवन भर सीखने, और उसे कार्यान्वित करने को आदर्श बनाना था। स्वराज की खोज की सकारात्मक प्रतिक्रिया के बाद प्रतिभागियों को फिर से जोड़ा गया। यह एक और पेशकश थी। दूसरे संस्करण की रूपरेखा मीना जलील के सहयोग से बनाई और आगे बढ़ाई गई, और वह बच्चों के लिए संदर्भ आधारित कार्यक्रम की थी।

सबक

वर्तमान विकास व प्रगति के माडल से जो असंतुष्ट हैं और यथास्थिति पर सवाल खड़ा करते हैं, और प्रचलित आम रास्ते से अलग नए रास्ते की तलाश में हैं, उनके लिए यह मंच बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें वे अपनी बात साझा करते हैं, संवाद करते हैं और अपने सहयात्रियों से परस्पर सहयोग व हिम्मत पाते हैं। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह संवाद करने और निजी बातों को साझा करने का गैर निर्णायक स्थान भी देता है। साथ ही ऐसे अवसर व परिस्थिति का निर्माण करता है जिसमें युवा अपनी इच्छाओं के अनुसार मिलकर एक साथ काम करें और उनका सकारात्मक कार्यान्वयन करने की क्षमता अर्जित करें।

संपर्क

आशिक कृष्णन, ashikkrishnank@gmail.com
https://www.travellersuniversity.org

कृपया इसे भी देखेः
https://ashikk-krishnan.medium.com/exploring-swaraj-c482a6ce68a

कम्युनिटी कनेक्ट चैलेंज

युवाओं में नेतृत्व विकसित करना और नागरिक जागरूकता

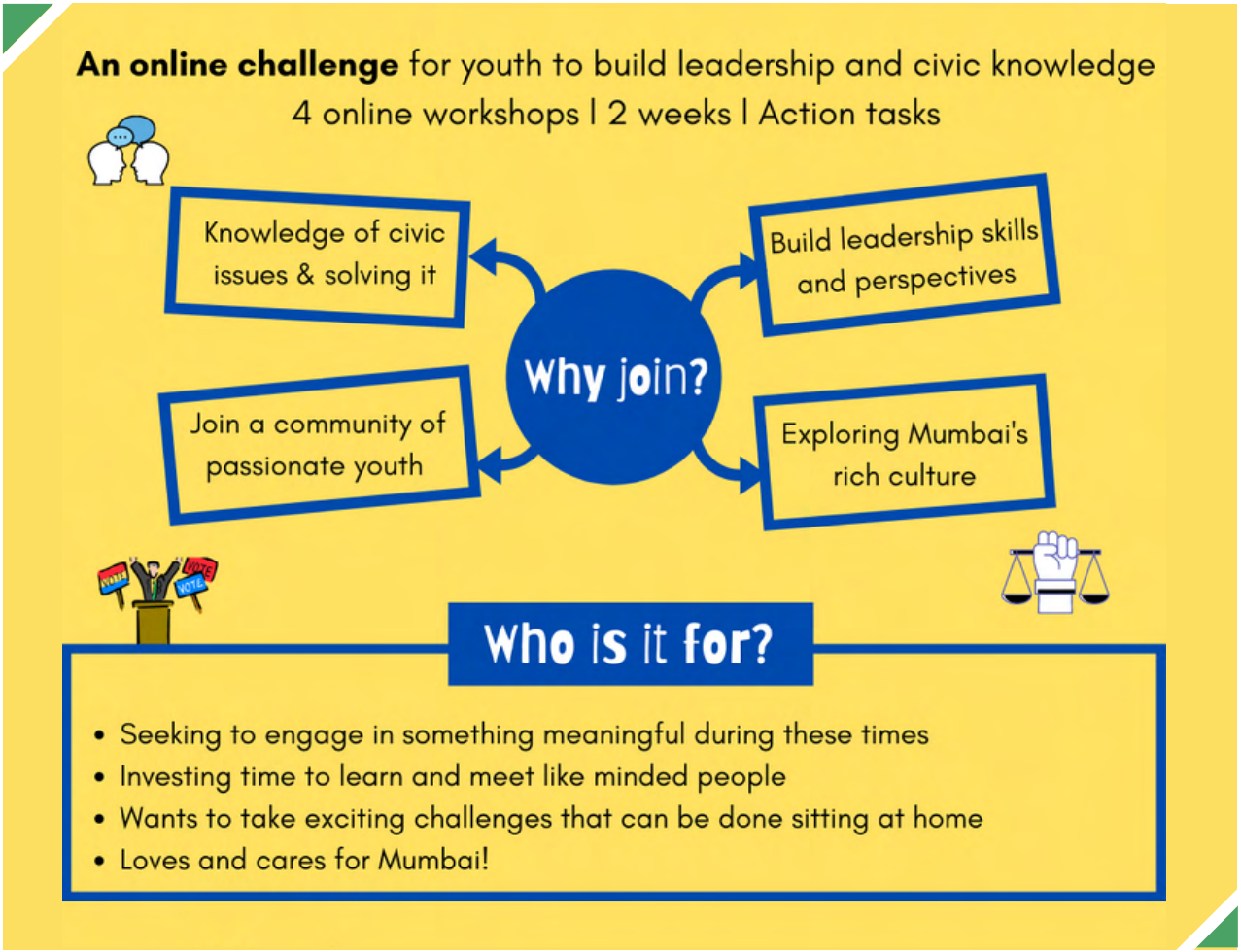

ब्लू रिबन मूवमेंट, मुंबई स्थित युवाओं के नेतृत्व में चलनेवाला आंदोलन है, जो बेहतर दुनिया के लिए युवा नेतृत्व तैयार करने और समुदाय से जोड़ने का काम करता है। वह लोकतंत्र में गहरा विश्वास करता है और 100 फीसदी सहमति आधारित निर्णय प्रक्रिया को व्यवहार में लाता है। कम्युनिटी कनेक्ट फैलोशिप, ब्लू रिबन मूवमेंट का प्रमुख कार्यक्रम है। इसकी शुरूआत मुंबई के युवाओं को रचनात्मक कामों से जोड़ने से हुई थी, जिससे नागरिक सक्रियता बढ़े और फेलो साथियों में पारस्परिक कौशल निर्माण हो।

वर्ष 2020 में महामारी के दौरान फैलोशिप रोकी थी, और इसने पूरी टीम को फैलोशिप पर पुनर्विचार करने, चिंतन करने, नए स्वरूप और एक नए रूप में सामने लाने का मौका दिया। युवाओं को सार्थक नागरिक यात्रा में जोड़ना और मजेदार शिक्षण जारी रखना। बीआरएम ने दो सप्ताह का ऑनलाइन नागरिक चुनौती संवाद, जिसे कम्युनिटी कनेक्ट चैलेंज (सीसीसी) भी कहा गया, का आयोजन किया। इसकी सोच मुंबई के युवाओं में नेतृत्व विकसित करना और उन्हें मुंबई में स्थानीय कार्रवाई की समझ बनाना था। सीसीसी यात्रा के माध्यम से प्रतिभागियों को नया परिप्रेक्ष्य देना, जिससे वे मुंबई शहर को नए नजरिए से देख सकें। वे शहर के इतिहास और संस्कृति पर निगाह डालें और जिससे प्रतिभागियों को उनकी मुंबईकर की पहचान से फिर से जोड़ने में मदद मिले। इससे सक्रिय होने के लिए आवश्यक छोटे कदम उठाने में भी मदद मिलेगी।

#नागरिककर्तव्य #नागरिकअधिकार #सक्रियनागरिकता

सीसीसी के तहत् 4 कौशल निर्माण सत्र और 21 सत्र के बाद के काम किए गए। इन सत्रों में मुंबई के साथ जानबूझकर संबंध बनाने पर जोर था,जो सिर्फ भौगोलिक स्थान जहां जन्म हुआ और आगे बढे, से परे समग्र नजरिए से देखने पर था। प्रतिभागी अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से शहर के अलग-अलग पहलुओं से जुड़ते थे। जैसे भोजन, सार्वजनिक स्थान, निर्णायक क्षण और आयोजन इत्यादि। इसमें मुंबई की नागरिक प्रणाली, नागरिक अधिकार और कर्त्तव्य संचार कौशल जैसे सुनना और जो भी सुमदाय में काम करने के लिए जरूरी है, उसकी समझ की तैयारी करना भी शामिल था।

सबसे बड़ी चुनौती सत्रों के बाद करनेवाले काम थे। प्रतिभागियों को 21 काम दिए गए थे, इसमें उन्हें अपने अनुभव व क्या सीखा, यह बताना था। किसी घर में यह समझना कि कोविड-19 से प्रभावित व्यक्तियों की कैसे मदद करें। एक नागरिक की शिकायत दर्ज करना, स्थानीय नगरपालिका वार्ड की सुविधाओं को समझना और दयालुता से अनपेक्षित काम भी करना।

प्रशिक्षुओं ने घरेलू मदद करना सीखा, ड्राइवर और उसका परिवार किस तरह नागरिक शिकायत दर्ज करे। इस प्रशिक्षु ने जल आपूर्ति के लिए शिकायत दर्ज करवाने में मदद की, जिससे वे लम्बे समय से जूझ रहे थे। उनके परिवार के बच्चों को भी इसमें शामिल किया, उन्हें भी कुछ नया सीखने को मिला, जो तालाबंदी के दौरान उपयोगी था।

सीसीसी के पहले बैच की शुरूआत वर्ष 2020 के जुलाई माह में हुई। 4 बैच के 63 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम पूर्ण किया और कार्यों की विस्तृत श्रृंखला को अंजाम दिया। इस कार्यक्रम ने उन युवा प्रतिभागियों को उम्मीद और विश्वास दिया,जो बदलाव ला सकते थे। यह वह समय था जब सब कुछ गंवाने और घर में अकेलापन का एहसास था। सीसीसी एक मंच बना, जहां लोग अपने विचार साझा करने और एक समान सोचवाले लोग बातचीत कर सकते थे। इससे यह उम्मीद है कि इस छोटी यात्रा से युवाओं को प्रेरणा मिलेगी और व्यापक समझ के साथ शहर से जुड़ेंगे और समुदाय को वापस देंगे, जो सीखा है, जो उनके पास है।

#नागरिककर्तव्य #नागरिकअधिकार #सक्रियनागरिकता

सबक

विविध बड़े महानगरों में, जैसे मुंबई और यहां तक कि कस्बों में, यह बहुत महत्वपूर्ण है। जहां हम रहते हैं वहां के बाशिन्दों के साथ हम संबंध बनाएं, उनसे जुड़े और सीखें। अपने आसपास और परिवेश की जिम्मेदारी लें, जिससे बदलाव कर सकें।

व्यावहारिक तरीके से नागरिक जागरूकता का निर्माण करना, सक्रिय नागरिक बनाने के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। जिम्मेदारी को पूरा करने और वांछित बदलाव के लिए नागरिक मुद्दों पर युवाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण कदम है।

संपर्क

पंखुरी जैन, pankhuri@brmworld.org
www.brmworld.org

बीजोत्सव

किसान और उपभोक्ताओं के बीच संबंध मजबूत करना

कोविड 19 के दौरान फुटपाथ पर जैविक सब्जियों की दुकान

'बीजोत्सव नागपुर' का प्रयास प्रत्यक्ष रूप से जैविक और प्राकृतिक कृषि उत्पादकों के साथ उपभोक्ताओं को जोड़ना है, जिससे शोषण कम हो और खाद्य मूल्य श्रृंखला में मिलावट भी न हो। इसकी शुरूआत वर्ष 2013 में, विदर्भ क्षेत्र में खाद्य मूल्य श्रृंखला में गिरावट की प्रतिक्रिया स्वरूप हुई। यह पिछले 8 सालों में तेजी से बढ़ी। यह एक स्वैच्छिक आंदोलन है, जो लगातार जैविक किसान, बीज बचानेवाले, शहरी किसान और उपभोक्ताओं में फैल रहा है। इस आंदोलन का विश्वास है कि प्रत्येक नागरिक का सुरक्षित, रासायनिक मुक्त खाद्य, स्वस्थ जैव विविधता पाने का अधिकार है। और यह आंदोलन सभी को यह सब उपलब्ध हो, इस दिशा में आगे बढ़ रहा है।

आकाश नौघारे ने बीजोत्सव के साथ सफर की अपनी शुरूआत 21 वर्ष की उम्र से की थी, वर्ष 2013 में जब वे पहले बीजोत्सव में एक स्वैच्छिक कार्यकर्ता के रूप में जुड़े थे। आगे के सालों में वे इसकी कोर टीम के सदस्य बन गए। बीजोत्सव, नागपुर में हर साल आयोजित किया जाता है, इसका उद्देश्य बीजों की विविधता, जैविक खेती और टिकाऊ जीवनशैली चयन की सराहना करना और उसका प्रचार-प्रसार करना है। वर्ष 2019 के बीजोत्सव में पूरे देशभर से करीब 20 हजार प्रतिभागी शामिल हुए थे। बीजोत्सव के दौरान देसी बीज, खेती-किसानी का अनुभव और जैविक खाद्य का आदान-प्रदान किया गया। इसी से कृषि उत्पादकों को मजबूत करने के लिए नेटवर्क का नेतृत्व भी किया। उत्पादक और उपभोक्ताओं का संबंध मजबूत बनाने के लिए पहल की शुरूआत हुई। यह बीजोत्सव नागपुर के मुख्य कार्यक्रमों में से एक था। इसके बाद, जागरूकता कार्यक्रम, बागवानी (किचिन गार्डन) कार्यशाला, बीजों का आदान-प्रदान, खेत प्रदर्शन कार्यक्रम, सुरक्षित खाद्य सम्मेलन आदि के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों को समुदायों, स्कूल, कॉलेज और अन्य समुदायों के साथ मिलकर आयोजित किया। वे जैविक खेती और खाद्य संप्रभुता के मुद्दे पर नीतिगत पैरोकारी के काम में संलग्न हैं।

#कृषि #खाद्य #संबंध

'बीजोत्सव नागपुर 2020', जो मार्च में आयोजित होना था, इस कोविड-19 और तालाबंदी के कारण नहीं हो सका। लेकिन इस समूह ने जागरूकता कार्यक्रम और कार्यशाला का काम ऑनलाइन जारी रखा। तालाबंदी के दौरान बीजोत्सव समुदाय के साथ नागपुर के किसानों और उपभोक्ताओं का मजबूत संबंध बनाने के लिए अगुआई की, उसकी जमीनी पहल की। आकाश और उनके दोस्त देवेन्द्र ठाकरे, विक्रम पदोले और अश्विनी औरंगाबाडकर ताई (बीजोत्सव से पूर्व में संबद्ध) ने सब्जी बाजार का आयोजन किया। यह जुलाई से दिसंबर के पहले सप्ताह तक चला। इससे प्रत्येक शनिवार करीब 15 किसान और 30-35 उपभोक्ता जुड़ते थे। इन्होंने फोन के माध्यम से किसानों की सहायता की पहल शुरूआत की। विशेषकर, जो उनके नेटवर्क के हिस्सा थे और कोविड-19 की पाबंदियो के कारण उनके उत्पाद बेचने में सक्षम नहीं थे। इसी दौरान, उपभोक्ताओं को भी ताजी सब्जियां व उत्पाद उपयुक्त दाम पर उपलब्ध नहीं थे। इसी के मद्देनजर सब्जी, दाल, अनाज और अन्य खाद्य चीजें खरीदी और उपभोक्ताओं को अस्थाई फुटपाथ दुकान पर उपलब्ध कराईं।

किसान समूह का काम विशिष्ट शैली में लगातार जारी रहा। किसानों से फोन पर संपर्क करना, कौन से उत्पाद उपलब्ध हैं, इसे देखना और इनकी सूची बनाना। शनिवार को फसल कटाई या तुड़ाई का दिन होता है। आकाश और उनके दोस्त, उनकी दोपहिया वाहन से खेतों का दौरा करते, जिनकी दूरी 60-70 किलोमीटर थी। वे वहां सब्जियों की तुड़ाई में मदद करते और उन उत्पादों को लेकर नागपुर लौट आते। अनाज, दालें और समय-समय पर किराने का सामान किसान लाते और अश्विनी ताई के स्थान में भंडारण करते। टीम ने किसानों के साथ बातचीत के बाद, इस पर सहमति बनाई कि हर सब्जी का दाम 35 रूपए प्रति किलोग्राम होगा। यह दाम इस आधार पर तय किया गया कि यह दाम थोड़ा ज्यादा है, उससे जिस दाम पर थोक व्यापारी से किसानों को मिलता है, बल्कि इसमें कृषि उत्पाद उपभोक्ताओं की पहुंच में भी है।

प्रत्येक शनिवार को बाजार 3.30 से 7.30 बजे तक आयोजित किया जाता था, और इस बीच सभी उत्पादों की बिक्री हो जाती थी। विभिन्न सोशल मीडिया के मंचों से उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता था। नागपुर बीजोत्सव के बरसों के काम से लोगों के बीच जो भरोसा और विश्वास कायम हुआ है, उससे इसमें काफी मदद मिली। उपभोक्ताओं और लोगों के बीच बाजार की साख बनी। इस पहल की अच्छी शुरूआत हुई। प्रति शनिवार सब्जी और सामान से 15,000 रूपए की सब्जी व सामान की बिक्री हुई। कभी-कभार किसान भी बाजार में आते और उपभोक्ताओं से बातचीत करते, जिससे किस तरह से उपभोक्ताओं को सब्जियां मिल सकती हैं, इसमें मदद मिलती। यह बाजार, वर्ष 2020 में तब बंद हो गया, जब कोविड-19 के दौरान सख्त पाबंदियां लगाई गईं। आकाश और उनके दोस्तों ने कुछ उपभोक्ताओं की जरूरतों का ख्याल रखा और उन्हें कुछ खाद्य उत्पाद जैसे शहद, गुड़ इत्यादि उपलब्ध करवाए।

#कृषि #खाद्य #संबंध

साप्ताहिक बाजार की कोशिश के बाद, आकाश ने अब बीजोत्सव टीम के साथ मिलकर एक साझा उचित मूल्य की दूकान की योजना बनाई है, जिससे नागपुर के लोगों को नियमित रूप से जैविक उत्पाद मिल सकेंगे। उनकी योजना है कि वे किसानों से निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य से पूरे सालभर उत्पाद खरीदेंगे, जिससे किसानों को सहायता मिलेगी। आकाश की सोच है कि बीजोत्सव के साथ इस काम से जागरूकता आएगी और इससे सुरक्षित खाद उत्पाद भोजन में शामिल होंगे और अनपेक्षित उत्पादों से बचेंगे। जैविक उत्पाद के नाम पर नकली उत्पाद भी बाजार में आ रहे हैं। उनकी सोच है कि इस दुकान के माध्यम प्रामाणिक जैविक उत्पाद मिलेगे।

सबक

किसान अपने आसपास के शहर, कस्बों और गांवों से जुड़ सकते हैं और सीधे उपभोक्ताओं को उनके जैविक उत्पाद बेच सकते हैं। इस प्रकार, वे बड़ी कंपनियों व दलालों के शोषण से भी बच सकेंगे। लेकिन इसके लिए जरूरी है उपभोक्ता और किसानों का संबंध और आपस में जुड़ाव, जिससे भरोसा बनता है। यह भरोसा न केवल संकट के समय लाभदायक है बल्कि सदैव ही उपयोगी व सार्थक है।

संपर्क

आकाश नोघारे, anaoghare@gmail.com
ngpbeejotsav@gmail.com

कृपया इसे भी देखेः
https://www.facebook.com/nagpurbeejotsav/

--
सभी फोटो- बीजोत्सव टीम

फार्म2फुड फाउंडेशन

भविष्य के लिए खेती, संकट के मुकाबले के लिए खेती

अलेंगमोरा स्कूल में खेती का काम

बागवानी

युवा विद्यार्थियों के लिए नवाचार कार्यक्रम

फार्म2फुड फाउंडेशन, एक गैर लाभकारी सामाजिक उद्यम है, जिसकी शुरूआत वर्ष 2011 में हुई थी। पोषण उद्यान (किचिन गार्डन) के माध्यम से जीवन कौशल देना, जो असम के 446 शासकीय स्कूलों में बने है। यह बागवानी, विज्ञान व गणित की प्रयोगशाला की तरह काम करती है, जो विद्यार्थी, कक्षाओं में अवधारणा व सिद्धांत के रूप से सीखते हैं, बागवानी में उन्हें प्रायोगिक तौर पर सीखने के लिए मिलता है। सबसे महत्वपूर्ण सीख है कि जैविक तरीके से खाद्य उगाना, जमीन की जुताई करना, पोषण और उनकी बागवानी में वन्य जैव इत्यादि, इन सबको छात्र-छात्राएं बागवानी के माध्यम से सीखते हैं। परिणामस्वरूप, जीवन की बड़ी सीख यहां से मिलती है। बीज और ज्ञानदान यात्रा के दौरान बड़े बुजुर्गों ने खेती से जुड़ा परंपरागत ज्ञान साझा किया। उन्होंने देसी बीज साझा किए, जबकि अभिभावकों ने जब भी जरूरत पड़ी, तब स्वैच्छिक श्रमदान कर भागीदारी की। बागवानी से जो भी फसलें मिलीं, वह स्कूल के मध्यान्ह भोजन में इस्तेमाल की गईं।

इसके अलावा, किशोरों के साथ सॉल्व निनजास (Solve Ninjas) कार्यक्रम भी चलाया गया, जिसके तहत् उन्हें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनाने की कोशिश की जा रही है। उनमें नेतृत्व क्षमता पैदा करना और सक्रिय नागरिक कौशल विकसित करना, जिससे वे उनके स्कूल व समुदाय में बदलाव लानेवाले बने। इसके साथ ही बी ए जागरिक (Be a Jagrik) नामक कार्यक्रम भी चलाया जा रहा है, जिसके माध्यम से संविधान साक्षरता को बढ़ावा मिले और सक्रिय नागरिक बनें, मौलिक अधिकार व कर्त्तव्यों को जीवन में अपनाकर सक्रिय नागरिक की भूमिका अदा करें। समाज में जो भेदभाव हैं, उनके खिलाफ लड़े और बच्चों को समावेशी नजरिया बनाने में मदद मिले।

फार्म2फुड का काम अन्य समुदायों की सदस्यता के साथ बढ़ा और गहरा हुआ है जैसे कम्युटिनी द यूथ कलेक्टिव, द वार्तालीप कोएलिशन और अशोका फेलो इत्यादि।

#खेतीकीपाठशाला #बागवानी #महामारीसेमुकाबला

कोविड-19 के दौरान सहायता

असम में चाय बागान समुदाय के बच्चों पर कोविड-19 महामारी का असर पड़ा। जोरहाट और गोलघाट में छोटे-बड़े करबी 200 चाय बागान हैं। इस दौरान, फार्म2 फुड फाउंडेशन ने करीब 3000 वंचित परिवारों से संपर्क किया। स्कूलों के बंद होने व अनियमित होने के कारण कई लड़कियों ने स्कूल से किनारा कर लिया, या शादी कर ली। यहां कुछ परिवारों में आर्थिक कठिनाई के कारण बाल तस्करी का खतरा भी खड़ा हो गया।

यहां संगठनों व संस्थाओं में काफी अच्छा सहयोग था। फार्म2 फुड कार्यकर्ताओं, पंचायत प्रतिनिधियों, स्वास्थ्यकर्मी (ए.एन.एम.), शिक्षक, और समुदाय के नेतागणों में राहत कार्य के लिए काफी अच्छा सहयोग व समन्वय था। इस दौरान परिवारों से पारस्परिक बातचीत करने में ज्यादा समय लगाया गया। उन्हें वायरस के बारे में सही जानकारी दी। इससे उन्हें महिलाओं और बच्चों के साथ किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार होने या मानसिक तनाव होने का संकेत ढूंढने में मदद मिलती।

फार्म2फुड ने गांवों के किसानों से करीब 600 क्विंटल ताजी सब्जियां खरीदीं और चाय बागान समुदायों के बीच वितरित कीं। इससे किसानों को और राहत सामग्री प्राप्त करनेवाले दोनों को मदद मिली। इसके अलावा, 3000 बच्चों को कलर (रंग बिरंगी) पेंसिल का डिब्बा, शिल्प कला सामग्री प्रदान की गई।

लगभग 500 युवा नेतागणों के साथ फार्म2फुड फाउंडेशन सघनता से काम कर रहा है। जागरूक कृषि उद्यमी अपना सामाजिक कार्यान्वयन कार्यक्रम बनाते हैं। इनमें से कुछ उनके पड़ोसियों की बागवानी (किचिन गार्डन) बनाने में मदद करते हैं। इससे तालाबंदी के दौरान परिवारों को ताजी सब्जियां मिलती रहीं। सब्जियों की खेती और उसका प्रबंधन, जैविक तौर-तरीके से हो, इसकी पूरी तैयारी की गई। और युवाओं ने इसमें अगुआई की। उन्होंने पोषण के बारे में सही जानकारी भी परिवारों के साथ साझा की।

जागरूक खेत उद्यमियों के समूह ने बच्चों की मदद से पड़ोसियों तक अकादमिक सहायता भी पहुंचाई। कुछ ने जैविक खेती, पोषण, योग और कोविड-19 से बचाव पर पोस्टर और वीडियो संदेश बनाए। इनका समुदायों के बीच जागरूकता लाने के लिए व्यापक स्तर पर प्रचार- प्रसार किया गया।

#खेतीकीपाठशाला #बागवानी #महामारीसेमुकाबला

सबक

कृषि, खाद्य, और पोषण हाथ से काम करके उत्पादन से जुड़ा है, जो बच्चों को आगामी कठिनाईयों का मुकाबला करने में सक्षम बनाता है। किताबी ज्ञान की बजाय हाथ से काम करने से आजीविका पाने व आत्मनिर्भर बनने में यह मददगार है। इसके अलावा, यह बहुत ही अच्छी खुली बाहरी पर्यावरण विज्ञान कक्षा भी है।

दुनिया कई तरह के संकट से गुजर रही है, भविष्य में और भी चुनौतियां आएंगी, उसका सामना करने के लिए बच्चे और युवाओं को तैयार करना। युवाओं के लिए जगह बनाना और उन्हें सक्षम बनाना, जिससे वे वर्तमान व भविष्य की चुनौती का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें।

संपर्क

दीपज्योति सोनू ब्रम्ह, deepjyotisonu@gmail.com
https://farm2food.org

कृपया इसे भी देखें:
https://vikalpsangam.org/article/farm-and-food-entrepreneurship-rebuilding-assams-fragile-economy-and-ecology/

--

सभी फोटो - फार्म2फुड फाउंडेशन टीम

हाईस्कूल में बागवानी करते बच्चे

विचारणीय प्रश्न

क्या यह कहानियां आपको अपने जीवन को अलग तरह से जीने के लिए प्रेरित करती हैं?

समाज में परिवर्तन के लिए आप कौन से मुख्य मूल्यों को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहेंगे?

आप अपने लिए और समाज के लिए किस तरह के वैकल्पिक भविष्य की कल्पना करते हैं?

आप अपने आसपास किस तरह के बदलाव को देखना पसंद करेंगे?

इसे करने के लिए आप किस तरह के काम और किस तरह की अपनी भूमिका अदा करने के लिए तैयार होंगे?

क्या इस परिवर्तन को सह-सृजन और सहयोग से किया जा सकता है, इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

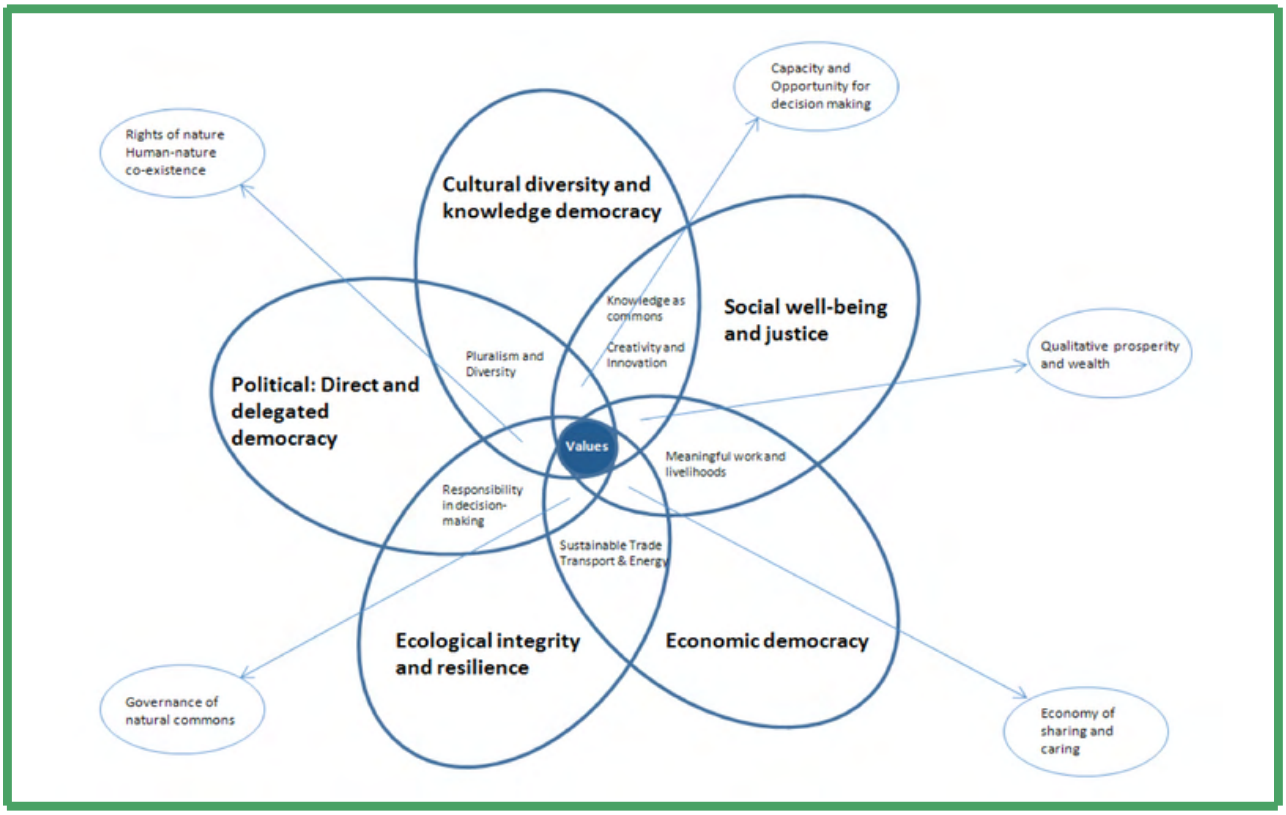

विकल्प संगम की प्रक्रिया से उभरे वैकल्पिक बदलाव के सूत्र

परिवर्तन के फूलों का यह ढांचा हमें एक नजरिया देता है कि किस तरह हम वास्तविक बदलाव ला सकते हैं। यहां कुछ प्रमुख मूल्यों के बारे में पढिए: https://vikalpsangam.org/about/the-search-for-alternatives-key-aspects-and-principles/.
हम उम्मीद करते हैं कि जैसा आप चाहते हैं, शायद आपके सवालों के जवाब इस नजरिए से आपको मिल सकें।

इस बारे में अपने विचार हमें जरूर लिखें,हमें जानकर बहुत अच्छा लगेगा। अगर आपके बदलाव की कोई कहानी हो तो कृपया साझा करें, हमें अशिक कृष्णन के ईमेल पर भेजे: ashikkrishnank@gmail.com

विकल्प
संगम

विवरण, सामंजस्य और लेखन
बाप्पादित्य मुखर्जी, प्रतिभा पाठक – अदोर
स्वर्णिमा कृति, जूही पांडे – चिन्हारी
आसना शाह, केजल सावला, अरविंद नटराजन – चैनल 5
बिलाल खान, अशिक कृष्णन – श्रमिक सम्मान
अनीता जॉन, जाबिर काराट, अशिक कृष्णन – ग्रीन वार्मस
अशिक कृष्णन – स्वराज की खोज
पंखुरी जैन, केजल सावला, अरविंद नटराजन – कम्युनिटी कनेक्ट चैलेंज
आकाश नोघारे, अश्विनी शाह – बीजोत्सव
दीपज्योति सोनू, स्नेहा गुटगुटिया, पराग महंत, प्रतिभा पाठक – फार्म2फुड फाउंडेशन

समन्वय
सुजाता पद्मनाभन

संपादन और प्रूफरीडिंग
रामगोपाल कोनेरीपल्ली और सुजाता पद्मनाभन

डिजाइन और साज-सज्जा
अशिक कृष्णन

हिन्दी अनुवाद
बाबा मायाराम

किसी भी प्रश्न के लिए कृपया इस ईमेल पर संपर्क कर सकते है
सुजाता पद्मनाभन – sujikahalwa@gmail.com

उद्धरण: विकल्प संगम, 'युवाओं की कहानियां: संघर्ष, उम्मीद और सामूहिक सपने की', खंड-5, ''साधारण' लोगों के असाधारण कार्य: महामारी और तालाबंदी से परे', विकल्प संगम कोर ग्रुप, पुणे, अप्रैल,2021

यह प्रकाशन कापीलेफ्ट प्रकाशन है। यह गैर वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए स्वतंत्र रूप से पुनर्प्रकाशन किया जा सकता है। बेहतर होगा कि श्रेय एवं उद्धरण के साथ, और कोई भी पुनर्प्रकाशन समान शर्तों के साथ और बिना किसी कापीराइट के होना चाहिए।

इस प्रकाशन के लिए सहयोग
दुलीप मथाई नेचर कंजरवेशन ट्रस्ट और मिसेरियोर

साधारण लोगों के असाधारण कार्य: महामारी और तालाबंदी से परे

इस दस्तावेज की पूरी श्रृंखला विकल्प संगम द्वारा लाई जा गई है, जिसमें कोविड-19 और तालाबंदी का मुकाबला समुदाय ने साथ में मिलकर किया। इस दौरान पूरे देश में बहुत से लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ा। जैसे खाद्य असुरक्षा, आजीविका का खोना, बीमारियों और अव्यवस्था हुई। ऐसे संकट के समय में समुदाय ने मिलकर इसका सामना किया और इससे बाहर निकालने की कोशिश की। उन्होंने एक टिकाऊ रणनीति बनाई, जिससे तुलनात्मक रूप से खाद्य, स्वास्थ्य, आजीविका, शासन और अन्य पहलुओं में आत्मनिर्भर बने।

अब तक के संस्करण इस प्रकार है

साधारण लोगों के असाधारण कार्य: महामारी और तालाबंदी से परे - खंड 1 | ग्राफिक्स नोवेल

सामुदायिक वन अधिकार और महामारी: ग्रामसभा ने दिखाई राह - खंड 2 | ग्राफिक्स नोवेल

पश्चिमी हिमालय में महामारी से मुकाबला - खंड 3

उम्मीद के बीज: महिलाओं ने दिखाई बदलाव की राह - खंड 4

विकल्प संगम, मानव और पारिस्थितिक कल्याण के लिए न्यायसंगत, समतापूर्ण और टिकाऊपन के रास्ते पर काम करनेवाले आंदोलनों, समूहों और व्यक्तियों को एक साथ लाने का एक मंच है। यह विकास के वर्तमान माडल और इसकी असमानता और अन्याय की संरचनाओं को खारिज करता है, और व्यवहार और दृष्टिकोण में विकल्पों की खोज करता है। देशभर के लगभग 70 आंदोलन और संगठन इसके कोर ग्रुप के सदस्य हैं। अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें: https://www.vikalpsangam.org/about/

- ACCORD (Tamil Nadu)
- Alliance for Sustainable and Holistic Agriculture (national)
- Alternative Law Forum (Bengaluru)
- Ashoka Trust for Research in Ecology and the Environment (Bengaluru)
- BHASHA (Gujarat)
- Bhoomi College (Bengaluru)
- Blue Ribbon Movement (Mumbai)
- Centre for Education and Documentation (Mumbai)
- Centre for Environment Education (Gujarat)
- Centre for Equity Studies (Delhi)
- CGNetSwara (Chhattisgarh)
- Chalakudypuzha Samrakshana Samithi / River Research Centre (Kerala)
- ComMutiny: The Youth Collective (Delhi)
- Deccan Development Society (Telangana)
- Deer Park (Himachal Pradesh)
- Development Alternatives (Delhi)
- Dharamitra (Maharashtra)
- Dinesh Abrol
- Ekta Parishad (several states)
- Ektha (Chennai)
- EQUATIONS (Bengaluru)
- Extinction Rebellion India (national)
- Gene Campaign (Delhi)
- Goonj (Delhi)
- Greenpeace India (Bengaluru)
- Health Swaraaj Samvaad (national)
- Ideosync (Delhi)
- Jagori Rural (Himachal Pradesh)
- Kalpavriksh (Maharashtra)
- Knowledge in Civil Society (national)
- Kriti Team (Delhi)
- Ladakh Arts and Media Organisation (Ladakh)
- Let India Breathe (national)
- Local Futures (Ladakh)
- Maadhyam (Delhi)
- Maati (Uttarakhand)
- Mahila Kisan Adhikar Manch (national)
- Mahalir Association for Literacy, Awareness and Rights (MALAR)
- Mazdoor Kisan Shakti Sangathan (Rajasthan) Revitalising Rainfed Agriculture Network (national)
- National Alliance of Peoples' Movements (national)
- National Campaign for Dalit Human Rights (national)
- Nirangal (Tamil Nadu)
- North East Slow Food and Agrobiodiversity Society (Meghalaya)
- People's Resource Centre (Delhi)
- People's Science Institute (Uttarakhand)
- reStore (Chennai)
- Sahjeevan (Kachchh)
- Sambhaavnaa (Himachal Pradesh)
- Samvedana (Maharashtra)
- Sangama (Bengaluru)
- Sangat (Delhi)
- School for Democracy (Rajasthan)
- School for Rural Development and Environment (Kashmir)
- Shikshantar (Rajasthan)
- Snow Leopard Conservancy India Trust (Ladakh)
- Sikkim Indigenous Lepcha Women's Association
- Social Entrepreneurship Association (Tamil Nadu)
- SOPPECOM (Maharashtra)
- South Asian Dialogue on Ecological Democracy (Delhi)
- Students' Environmental and Cultural Movement of Ladakh (Ladakh)
- Sushma Iyengar
- Thanal (Kerala)
- Timbaktu Collective (Andhra Pradesh)
- Titli Trust (Uttarakhand)
- Travellers' University (national)
- Tribal Health Initiative (Tamil Nadu)
- URMUL (Rajasthan)
- Vrikshamitra (Maharashtra)
- Watershed Support Services and Activities Network (Andhra Pradesh/Telangana)
- Youth Alliance (Delhi)
- Yugma Network (national)